पंचम अध्याय:

"विवेच्य कहानियों में चित्रित समस्याएँ ।"

*****

पंचम अध्याय : विवेच्य कहानियों में चित्रित समस्याएँ

प्रस्तावना :-

मानव एवं समस्या का अटूट और गहरा संबंध है। मानव जीवन में यदि 'समस्या' न हो तो मानव जीवन निरर्थक हो जाएगा । समस्याओं ने मानव को अपने शिकंजे में जकड़ लिया हैं। उस शिकंजे से जितनी तीव्रता से वह मुक्त होना चाहता है ; उतना ही वह उस समस्याओं के पाश में जकड़ लिया जाता हैं। डॉ. सीलम वेंकटेश्वरराव के विचारों में ''शरीर और छाया या आत्मा शरीर का जो नित्य एवं शाश्वत संबंध है। वही संबंध 'समस्या' एवं मनुष्य जीवन का है।''[1] संसार में समस्या न होती तो मानव सभ्यता का उत्थान भी संभव न होता। मानव हमेशा परिवर्तन चाहता है। वह नए युग के साथ बदलता रहा है।

आज का युग 'वैज्ञानिक युग' कहा जाता है। विज्ञान ने मानव जीवन की ओर सूक्ष्म दृष्टि से देखने की शक्ति प्रदान की है। मानव में अपनी प्रज्ञा के द्वारा , नए-नए अनुसंधानों के द्वारा विकास का मार्ग प्रशस्त किया हैं। मानव ने जैसे-जैसे प्रगति की वैसे-वैसे वह विभिन्न समस्याओं से प्रभावित हुआ। मानव की सहज प्रवृत्ति यह रही है कि, वह हमेशा आशावादी रहा है। प्रत्येक मानव जीवन में पद, प्रतिष्ठा, धन लाभ एवं भौतिक सुख-सुविधाओं की प्राप्ति में दिन-रात प्रयासशील रहता हैं। इसी प्रयास में जो बाधाएँ, रुकावटें, आती हैं, वे ही असल में ''समस्या'' शब्द पहले साहित्य क्षेत्र तक मर्यादित रहा । इन दिनों सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक आदि सभी क्षेत्रों में वह व्यापक रुप में दिखाई देने लगा हैं।

5.1 समस्या : अर्थ एवं परिभाषा

5.1.1 अर्थ :- 'समस्या' यह मूल शब्द संस्कृत भाषा का है। हिंदी नें उसे तत्सम शब्द के रुप में स्वीकार किया है। चित्रकाव्य के सात प्रकारों में से 'समस्या' यह भी एक हैं। संस्कृत के आचार्यों ने समस्या का केवल यही अर्थ लिया है कि 'समस्या'

वह है, अपनी एवं दूसरे की रचना का संगठन अथवा समन्वय हुआ हो। लेकिन आधुनिक युग में 'समस्या' का स्वरुप परिवर्तित होता गया। अब इसका अर्थ केवल कठिन वस्तु से लिया गया दिखाई देता है। 'समस्या' शब्द के लिए अंग्रेजी में 'Problem' शब्द पर्यायवाची रुप में दिया जाता है।

'समस्या' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत भाषा के 'सम' 'उपसर्ग' तथा 'अस' धातु के संयोग से हुई है। 'सम ' का अर्थ है 'एकत्र' तथा 'अस' का अर्थ 'फेंकना' अर्थात् एकत्र रखना या करना 'समस्या' है।

5.1.1 **'मानक हिंदी कोश'** में 'समस्या ' शब्द की परिभाषा देते हुए लिखा है -

१) ''मिलने की क्रिया या भाव ''। मिलन।

२) मिश्रण का संघटन।

३) उलझनवाली ऐसी विचारणीय बात जिसका निराकरण सहज में न हो सकता हो। कठिन या बिकट प्रसंग।

४) छंद, श्लोक आदि का ऐसा अंतिम चरण या पद जो काव्य रचना के कौशल्य की परीक्षा करने के लिए उस उद्देश्य से कवियों के सामने रखा जाता है कि, वे उसके आधार पर अथवा उसके अनुरुप छंद या श्लोक प्रस्तुत करें।''२

5.1.2 **''मानक - अंग्रेजी - हिंदी कोश''** में समस्या शब्द की परिभाषा देते हुए लिखा है -

'' १) समस्या, उलझन, कठिन प्रश्न ।

२) पहेली, दुर्बोध बात, उलझन।

३) (रेखा) - निर्मेय।

४) (तर्क) समस्या , प्रश्न ।

५) (भौ. गणित) प्रश्न सवाल।

६) (शतरंज) मोहरों का नक्शा या व्यूह, प्रहेलिका।''३

5.1.3 'हिंदी विश्वकोश' में 'समस्या' शब्द की परिभाषा देते हुए लिखा है -

'समसन उत्कत' सेपण' सम असव्यत'

'' १) किसी श्लोक या छंद आदि का वह अंतिम पद का टुकडा जो पूरा श्लोक या छंद बन्नाने के लिए तैयार करके दूसरों को दिया जाता है और जिसके आधार पर पूरा श्लोक या छंद बनाया जाता है।

पर्याय - समासार्थी, समस्यार्थी, समाप्तीर्थी।

२) संघटन।

३) मिश्रण, मिलाने की क्रिया।

४) कठिन अवसर या प्रसंग।''४

5.1.4 'भाषा शब्द कोश' में 'समस्या' शब्द की परिभाषा देते हुए लिखा है - ''कठिन या जटिल प्रश्न, गूढ़ या गहन बात, उलझन, कठिन प्रसंग, किसी पद्य का अंतिमांश जिसके आधार पर पूर्व पद्य रचा जाता है,' संघटन, मिश्रण, मिलने का भाव या क्रिया।'' ५

5.1.5 'हिंदी शब्दसागर' में 'समस्या' शब्द की परिभाषा देते हुए लिखा है -

'' १) संघटन

२) मिलने की क्रिया मिश्रण।

३) किसी श्लोक या छंद आदि का वह अंतिम पद या टुकडा जो पूरा श्लोक या छंद बनाने के लिए तैयार करके दूसरों को दिया जाता हैं और जिसके आधार पर पूरा श्लोक या छंद बनाया जाता है।

४) कठिन अवसर या प्रसंग। कठिनाई जैसे - 'इस समय तो उनके सामने कन्या के

विवाह की एक बड़ी समस्या उपस्थित है।''६

5.1.6 'नालंदा विशाल शब्दसागर' में 'समस्या' शब्द की परिभाषा देते हुए लिखा है -

''१) वही उलझनवाली या विचारणीय बात जिसका निराकरण सहज में न हो सके। कठिन या विकट प्रसंग। 'प्राब्लेम'

२) संघटन

३) किसी श्लोक या छंद आदि का वह अंतिम चरण या पद जो पूरा छंद आदि का वह अंतिम चरण या पद जो पूरा छंद बनाने के लिए कवियों के सम्मुख रखा जाता है।'' ७

'समस्या' मानव जीवन का एक अभिन्न अंग बन गई है। जिससे मानव दो हाथ करते-करते सफलता की ओर पहुँचने की कोशिश करता है। मानव जीवन में 'समस्या' अनिवार्य रही है। 'समस्या' से मानव को जीवन का नया मंत्र मिला है। एक नई दिशा मिली है। इसलिए संक्षेप में कहा जा सकता है 'समस्या' मानव जीवन में कभी-कभी उलझन निर्माण करती है। तो कभी वह मार्गदर्शक का भी कार्य करती है।

मानव सामाजिक प्राणि है। वह समाज में रहता है। समाज में रहते हुए राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक क्षेत्रों से उसका गहरा संबंध रहता हैं। अत: प्रस्तुत क्षेत्रों की समस्याएँ संवेदनशील , भावुक, सहृदयशील, चिंतनप्रिय कहानीकारों के कहानियों में नजर आती हैं। वर्ष, 2003 की 'नया ज्ञानोदय' पत्रिकाओं में प्रकाशित कहानी साहित्य इसके लिए अपवाद नहीं हैं। प्रभाकर श्रोत्रिय द्वारा संपादित वर्ष, 2003 की 'नया ज्ञानोदय' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों में निम्नलिखित क्षेत्र की समस्याएँ दिखाई देती हैं। उनका विवरण इस प्रकार से है।

१) सामाजिक समस्या

२) राजनीतिक समस्या

३) शैक्षिक समस्या

४) धार्मिक समस्या

5.2 सामाजिक समस्याएँ :-

<u>प्रस्तावना :-</u>

भारतवर्ष में आधुनिक समाज सुधारकों ने भारतीय समाज व्यवस्था में अभिव्याप्त समस्याओं के विरोध में अलग-अलग प्रकार के आंदोलन चलाए । समाज से संबंधित जो समस्याएँ होती है, वह सामाजिक समस्याओं के दायरे में आ जाती हैं। सामाजिक समस्याओं के बारे में डॉ. विमल भास्कर का विचार यह रहा है कि - ''वर्तमान युग की समस्याएँ तो कुछ दूसरे रंग में रंगी हुई है कारण यह है कि आज का व्यक्ति यदि एक ओर पुराने संस्कारों और मान्यताओं से बंधा रहना चाहता हैं। तो दूसरी ओर उन्हें छोड़कर नए संस्कार ग्रहण करने का संघर्ष भी वह निरंतर कर रहा है। इस संघर्ष में वह कहीं-कहीं पथभ्रष्ट हो गया है। वस्तुत: वर्तमान युग, समस्याओं का युग हैं।''[८] जिस पर निम्नलिखित प्रकार से प्रकाश डाला जा रहा है।

5.2.1 <u>विधवा समस्या :-</u>

भारतीय समाज में किसी भी काल में विधवा की स्थिति दयनीय रही है । भारतीय समाज यह मानकर चलता है कि, स्त्री का विवाह संस्कार जीवन में सिर्फ एक ही बार होता है। पति के देहांत के बाद पत्नी को उपेक्षित जीवन जीना पड़ता है। विधवा स्त्री के साथ समाज अमानवीय व्यवहार करता है। विधवाओं की स्थिति चिंताजनक रही हैं। आज शिक्षा, नारी समानता की विचार आदि के कारण भारतीय नारी के जीवन में परिवर्तन आ गया है। आज भारतीय समाज में विधवा की स्थिति मध्ययुगीन विधवा जैसी नहीं हैं। फिर भी भारतीय विधवा का जीवन उपेक्षित और

दयनीय रहा है। प्रस्तुत समस्या के संबंध में डॉ. रेखा कुलकर्णी का विचार यह रहा है कि, ''जिस तरह भारतीय पतिव्रता स्त्री दुनिया में आदर गौरव एवं सम्मान की वस्तु है, उसी प्रकार भारतीय विधवा जैसी तुच्छ, उपेक्षित, दयनीय दुनिया की अन्य कोई वस्तु नहीं हैं।'' 9 हिंदी के कहानीकारों ने अपनी कहानियों में विधवा समस्या को चित्रित किया हैं। 'नया ज्ञानोदय ' इसके लिए अपवाद नही है।

'नया ज्ञानोदय' दिसंबर,२००३ के अंक में प्रकाशित रमा सिंह द्वारा लिखित ''ग्रहण'' कहानी में विधवा समस्या का जिक्र हुआ है। कहानी में वसुंधरा विधवा है। उसके पिता उसे बोझ मानते है। वसुंधरा उदर-निर्वाह के लिए अपना घर छोड़ देती है। इस समस्या का चित्रण करते हुए लेखिका ने लिखा है, - ''घर में काम के लिए, बच्चों की देखभाल के लिए यदि कोई बेसहारा विधवा मिल जाय, वह भी बिना वेतन के, तो इससे अच्छी बात भला क्या होगी। वहाँ बैठे हुए सभी लोगों के कान में स्वार्थ की घंटियाँ बजने लगीं .... वसुंधरा बाल विधवा... उम्र करीबन पन्द्रह साल.... पिता बहुत बूढे और बीमार, बस प्राण उसी के लिए अटके थे कि कोई शरणदाता उसकी बेटी को मिल जाय ताकि वह शान्ति से अपने प्राण त्याग सके ... ।''[१०]

इस प्रकार विधवा समस्या का जिक्र प्रस्तुत कहानी में हुआ है।

'नया ज्ञानोदय' जुलाई, 2003 कें अंक में प्रकाशित मालती जोशी द्वारा लिखित 'तुम मेरी राखो लाज हरी' कहानी की नायिका संध्या को एक रिश्तेदार के विवाह में जाना पड़ता है। तब वहाँपर उसे केवल विधवा होने के कारण उसके सब रिश्तेदार अमाँगलिक मानक्रर उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं करतें। इस बात से संध्या काफी दु:खी हो जाती है।

'नया ज्ञानोदय' जून,२००३ के अंक में प्रकाशित अशोक प्रियदर्शी द्वारा लिखित 'औरत' कहानी की नायिका विधवा है। वह भी विधवा जीवन का दु:ख भोग

रही है।

इस प्रकार 'नया ज्ञानोदय' के विवेच्य कहानियों में कहानीकारों ने प्रस्तुत समस्या का गंभीर रुप समाज के सामने लाने का प्रयास किया है।

5.2.2 बलात्कार की समस्या :-

बलात्कार की समस्या का केंद्र पुरुष है। पुरुष की कामुकता और स्त्री की असहायता एवं प्रथा परंपराओं के झूठे विश्वासों के कारण स्त्री पर बलात्कार होता हैं।

बलात्कार के संदर्भ में नारी हमेशा शोषित रही है। स्त्री अबला होने के कारण उसपर अत्याचार होता आ रहा है। २१ वी सदी के कहानीकारों ने प्रस्तुत समस्या की ओर गंभिरता के साथ देखा हैं। और अपने कहानियों में प्रस्तुत समस्या पर प्रकाश डाला हैं।

'नया ज्ञानोदय अप्रैल,२००३ के अंक में प्रकाशित शिवकुमार यादव ' द्वारा लिखित 'कई-कई शक्लोंवाले प्रेत ' कहानी में प्रस्तुत समस्या का जिक्र हुआ है। लेखक ने प्रस्तुत समस्या की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट करते हुए लिखा हैं - ''कैलाश बाबू के यहाँ। उन्होंने बताया'' ''सुबह-सुबह !''

''एक दुर्घटना घट गई है।'' बाबूजी खुलने लगे। ''कैसी दुर्घटना ?'' माँ भी बेचैन हो उठी। ''रात , कुछ लड़कों ने सुनन्दा के साथ....'' बाबूजी कहते-कहते रह गये। जैसे उनके होठों पर गर्म सैलाब गिर पड़ा हो। पर माँ को घटना की पूरी जानकारी लिये बिना चैन कहाँ, उन्होंने पूछा, ''हुआ क्या ?''

''बलात्कार किया और गला घोटकर खँड़हर के कुएँ में फेंक दिया ।'' बाबूजी एक ही साँस में बोल गये।''[११]

इस तरह बलात्कारित नारी का जीवन कुंठापूर्ण होता है। यहाँ तक कि पुरुष की वासना का शिकार बनते हुए उसे अपनी जान गवानी पड़ती है।

5.2.3 परित्यक्ता की समस्या :-

किसी न किसी कारण विवाह के पश्चात् पति पत्नी को त्याग देता है। तब ऐसी स्त्री को ''परित्यक्ता'' कहा जाता है। ऐसी परित्यक्ता स्त्री समाज में उपेक्षा का पात्र बनती है। इस पक्ष पर अपना विचार प्रस्तुत करते हुए डॉ.आसाराम बेवले ने लिखा है। ''भारतीय समाज में विवाह संस्कार को पवित्र माना जाता है। इसी संस्कार के कारण पति-पत्नी जीवनभर एक साथ जीवन बिताने का संकल्प करते हैं और पति-पत्नी मधुर सम्बधों में बँध जाते हैं। पुरुष के रुप या स्वभाव को देखे समझे बिना रुढ़ि परम्परा के अनुसार नववधू उसके साथ अग्नि को साक्षी रखकर सात फेरे लेती है, और सात जन्मों तक साथ निभाने का वादा करती हैं। परन्तु कुछ स्त्रियों की तकदीर में सात जन्म ता दूर सात महीने या कभी-कभी सात दिन भी नसीब नहीं होते।"[१२]

प्रस्तुत समस्या का चित्रण 'नया ज्ञानोदय' मई, २००३ के अंक में प्रकाशित दिनेश पाठक द्वारा लिखित ''पारुल दी'' कहानी में दिखाई देता है। विवेच्य कहानी की नायिका पारुल दी है। जो परित्यक्ता है। विवाह होने के पश्चात् उसका पति उसे त्याग देता है। लेखक ने इस पक्ष का चित्रण करते हुए लिखा हैं , - '' तभी कोई सालभर बाद पारुल दी का आना हुआ था। पर दर असल यह पारुल दी का आना नहीं, वापस लौटना था। एकदम तिरस्कृत , अपमानित और प्रतिदिन। जिसने भी देखा, अवाक् देखता ही रह गया। मुँह खुला का खुला, अचंभित। तो क्या यह वही पारुली है... किशनानन्दज्यू की पुत्री पारुली ? नहीं यहाँ तो कोई साम्य ही नहीं था, रंचमात्र भी नहीं।'' मैंने पीड़ा भरी कराह के साथ आँखें मूँद ली थी। यह सच में क्या हो गया था पारुल दी को ! कोटरों में धँसी आँखोवाली एक कंकाल मात्र रह गई थीं वह... हड्डियों का स्पष्ट ढ़ाँचाभर । कोई देखे तो कैसे

पहचाने ! '' [१३] इस प्रकार पारुल दी का शोषण होता है मायके और ससुराल के चक्र में वह पीसती जा रही है। पारुल के साथ उसकी सास अमानवीय व्यवहार करती है। यहाँ तक उसे भोजन नहीं दिया जाता। उसके साथ मार-पीट की जाती है। उसका पति उसे त्याग देता है। और वह परित्यक्ता का जीवन व्यतीत करती है।

'नया ज्ञानोदय' नवंबर, २००३ , के अंक में प्रकाशित उर्मिला शिरीष द्वारा लिखित 'सहसा एक बूँद उछली' कहानी में मिनी का पति उसे परित्यक्ता का जीवन भुगतने के लिए बाध्य करता है।

इस प्रकार विवेच्य कहानियों में कहानीकारों ने 'परित्यक्ता की समस्या' की ओर समाज का ध्यान आकृष्ट किया है।

5.2.4 अविवाहित स्त्री की समस्या :-

भारतीय समाज में विवाह एक श्रेष्ठ संस्कार माना जाता है। लेकिन भारतीय समाज में अविवाहित स्त्री की समस्या अपने आप में एक गंभीर समस्या है। इस 'समस्या' संदर्भ में डॉ. आसाराम बेवले लिखते हैं - ''आधुनिक युग में प्रस्तुत समस्या प्रमुखता से सामने आये है। शिक्षा प्राप्त नौकरी करनेवाले नारी पर परिवार की जिम्मेदारी रहती है। इस कारण वह शादी नहीं कर सकती और कुछ घरों में अन्य अनेक कारणों से लड़की का विवाह जल्दी नहीं कर सकते।''[१४] जिससे अविवाहित स्त्री की समस्या निर्माण होती है।

''नया ज्ञानोदय'', दिसंबर, 2003 के अंक में प्रकाशित जयशंकर द्वारा लिखित 'भुरमुंडा' कहानी में प्रस्तुत समस्या के विकराल रुप पर अपनी कलम चलाते हुए लेखक ने लिखा है, - '' इस तरह वह बता रही कि शुरुआत में जब वह हमारे घर आता था तब मुझे ज्यादा तर वक्त पढ़ते हुए देखा करता था। उन दिनों मैं कानून की परीक्षा की तैयारी कर रही थी और खाली वक्त में पढ़ती ही रहती थी।

मुझे लग रहा था कि मैं बाबा का पेशा अख्तियार करुँगी और इससे बाबा को खुशी मिलेगी, पर ऐसा हुआ। वह मेरे विवाह के लिए उत्सुक थे। वे अपनी मौत के पहले मेरे हाथ पीले करना चाहते थे। अब तक मेरे हाथ पीले नहीं हुए है। पता नहीं अब होंगे भी या नहीं। इस सावन में मैने तीस पार किए हैं। मेरी सारी सखी-सहेलियों के दो-तीन बच्चे हो चुके हैं। मेरी चचेरी बहनों को मेरे अविवाहित होने पर तरस आता हैं। रिश्ते-नाते के लोग बाबा के पास ऐसे पुरुषों की तस्वीरें छोड़ जाते हैं जिनकी पत्नी नहीं रही हैं या पैंतालीस - पचास की उम्र में जाने के बाद भी जिन्होंने शादी नहीं की है।''[१५] इस प्रकार विवेच्य कहानी में स्त्री की अविवाहित समस्या को चित्रित किया है।

5.2.5 दाम्पत्य संबंध में टूटन की समस्या :-

दाम्पत्य जीवन में परिवार महत्त्वपूर्ण आधार है। पति-पत्नी का विवाह भी परिवार जड ही है। पति-पत्नी का एक-दूसरे के प्रति प्रेम एवं सामंजस्य से ही दाम्पत्य जीवन सुखमय बनता है। पति-पत्नी में एक दूसरे को समझने की क्षमताका अभाव होनेपर दाम्पत्य जीवन मे टूटन की समस्या निर्माण होती है। जिससे संपूर्ण पारिवारिक जीवन में टूटन और बिखराव आ जाता है।

विवेच्य कहानियों में प्रस्तुत समस्या की ओर गंभीरता के साथ देखा है। और प्रस्तुत समस्या का विकराल रुप समाज के सामने रखने की कोशिश की है 'नया ज्ञानोदय', दिसंबर, २००३, के अंक में प्रकाशित जयनंदन द्वारा लिखित 'अपदस्थ' कहानी में चित्रित परिवार का दाम्पत्य जीवन विनाश की कगार पर है। प्रस्तुत कहानी में लेखक ने प्रकाश डालते हुए लिखा है, -''मैं तुमसे माफी नहीं माँग रही, जो चाहे तुम सजा दो, क्यों और कैसे हुआ यह सब, सफाई के कोई शब्द नहीं हैं मेरे पास, लेकिन यह हकीकत है कि मैं बेअख्तियार होती रही। तुम इतने भोले और

शरीफ रहे कि मैं आराम से तुम्हारी आँखों में धूल झोंकती रही। तुम धूल खाकर भी आजिज न हुए मगर हम धूलझोंककर भी परेशान-हैरान रहे। अब तुम्हारे साथ मेरी और से और ज्यादती न हो, इसलिए सब कुछ साफ-साफ बताकर जा रही हूँ।"[१६]

'नया ज्ञानोदय', अगस्त, २००३ के अंक में प्रकाशित 'गोविंद मिश्र' द्वारा लिखित 'तुम हो' कहानी में नायिका सुषमा और नायक रघू है। कहानी में पति-पत्नी में असमंजस्य का वातावरण है। रघू और उसकी पत्नी सुषमा दोनों उच्च शिक्षित है। लेकिन, दोनों में आचार-विचारों का सामंजस्य न होने के कारण प्रस्तुत परिवार टूटता हुआ दिखाई देता है। इस पक्ष पर प्रकाश डालते हुए लेखक ने लिखा है, - ''शायद दोनों अकेले रहें तो सब ठीक-ठाक हो जाए..... यह सोचकर सास-ससुर ने दोनों को उनके लिए बनवाये फ्लैट में भेज दिया। रघू ने अपने को अटैच बाथवाले कमरे में बंद कर लिया , उसे दूसरे कमरे में फेंक दिया। अपने कमरें में वह पीता ही रहता। वह तलाश में रहती, कब उससे बात करे, पर वह होश में कब रहता था और शराब से वह क्या बात करती। एक दिन अटैची में अपना सामान भरकर फ्लैट में उसे अकेला छोड़ वह कहीं को निकले, गया, आज तक पता नहीं कहाँ रहता है।"[१७]

'नया ज्ञानोदय', मार्च-अप्रैल, 2003, में प्रकाशित राजी सेठ, द्वारा लिखित 'दलदल' कहानी में दाम्पत्य जीवन में आनेवाले बिखराव की समस्या की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया हैं।

विवेच्य कहानी का नायक अमर बेकार है। उस की पत्नी आरती नौकरी करती है। वह स्वाभिमानी है। जिसके कारण आए दिन पति-पत्नी में लड़ाई-झगड़े होते हैं। इस प्रकार विवेच्य कहानियों में कहानीकारों ने दाम्पत्य जीवन में आनेवाले

बिखराव को चित्रित किया है।

5.2.6 आदिवासी संस्कृति पर अतिक्रमण की समस्या :-

भारत में ग्राम, नगर, महानगरों से दूर आदिवासी लोग अपना स्वतंत्र अस्तित्त्व बनाकर जीवन यापन कर रहे हैं। उनके अपने रीति-रिवाज, रुढ़ि परंपरा, त्यौहार, संस्कार अलग प्रकार के होते हैं। लेकिन औद्योगिकरण की वजह से आदिवासी संस्कृति पर अतिक्रमण हो रहा है। जिससे उनकी संस्कृति का नामो-निशान मिट रहे है। जब इस प्रकार का अतिक्रमण होता है। तब अदिवासी लोग इसके विरोध में आंदोलन चलाते हैं। और अपनी संस्कृति की रक्षा करने का प्रयास करते हैं। यह बात आदिवासी लोगों के लिए समस्या रही हैं।

प्रस्तुत समस्या का जिक्र 'नया ज्ञानोदय' जुलाई २००३, के अंक में प्रकाशित विजय द्वारा लिखित 'जंगल का सपना' कहानी में हुआ है। इसके संदर्भ में लेखक ने लिखा है, - ''नहीं साब ! हरी टहनी काटना भी हम पाप मानते हैं। सौ साल पहले कहाँ थी, नुरही ! इससे पहले हमारा किला जंगल से घिरा था। किसने काटा वह जंगल ? किला आपका हो गया। लकड़ी जलाई ही नहीं, घरों में कुर्सी मेज, सोफा और स्टूल बनने में चुक गई। और ये फिरंगी व्यापारी जड़ी-बूटी पर कैसे झुक गये ! ये बूटियाँ ले जाएँगें तो वही यहाँ की सस्ती दवा महँगे दामों में खरीदनी होगी। पहले इनका राज चला था। अब बाजार चलेगा।''[१८] जंगल विभाग के अधिकारी, आदिवासी संस्कृति पर अतिक्रमण करते नजर आते हैं। जिसका विरोध आदिवासियों ने किया था।

5.2.7 अविकसित संतानों की समस्या :-

जन्मना कुछ संतान ऐसी होती हैं उनका प्राकृतिक विकास नहीं होता। कुछ संतानों को अपने अभिभावकों से विरासत के रुप में अविकसितता के दोष मिलते हैं।

कुछ संतान परिस्थिति के कारण अविकसित रुपमें जन्म लेती हैं। ऐसी संतान अविकसित कहलाए जाती हैं। इनकी परवरिश करना अभिभावकों के लिए बहुत बडी समस्या बन गई हैं।

विवेच्य कहानीकारों का ध्यान प्रस्तुत समस्या की ओर गया हैं। कुछ कहानीकारों ने अपनी कहानियों में प्रस्तुत समस्या पर प्रकाश डालने की कोशिश की हैं।

'नया ज्ञानोदय' , दिसंबर २००३ के अंक में प्रकाशित रमा सिंह द्वारा लिखित 'ग्रहण' कहानी में प्रस्तुत समस्या का जिक्र करते हुए लेखिका ने लिखा है, - ''क्या करें बहनजी, इस (अविकसित) बेटे की वजह से लगता है, किसी ने गर्म लोहे से हमारे जीवन को दाग कर छोड़ दिया है। जिस जले दाग को हम न किसी को दिखा सकते हैं और न छिपा सकते हैं। अब हम लोग बूढ़े हुए। हमारे बाद कौन इसकी परवाह करेगा ? माँ होकर भी मैं तो चाहती हूँ मेरे जीते जी यह इस दुनिया से चला जाय ..... कहने के साथ वह सुबक उठी।''[१९]

'नया ज्ञानोदय,' नवंबर, २००३ के अंक में प्रकाशित उर्मिला शिरीष द्वारा लिखित ''सहसा एक बूँद उछली '' कहानी में लेखिका ने अविकसित संतानों की समस्या की गंभीरता पर चिंता प्रकट करते हुए लिखा है।, - ''बेटी, मैं तुम्हें धोखे में नहीं रखना चाहती हूँ। जो है - उस सच्चाई का सामना करो। '' ''तो क्या वह कभी भी नहीं चल पाएगी .... बैठ भी नहीं पाएगी .? मांस का जीता-जागता लोथड़ा बनकर जाएगी ? यह क्या हो गया मम्मा ? कभी किसी का बुरा नहीं चाहा फिर वह सब मेरी बच्ची के साथ क्यों हुआ ? ''[२०]

इस प्रकार अविकसित संतानों की समस्या का जिक्र इन कहानियों में हुआ हैं।

5.2.8 भिखारियों की समस्या :-

भिखारी भारतीय समाज का अभिशाप है। यह सामाजिक विघटन का सूचक है। भारत में ऐसे लाखों लोग हैं। जो केवल भीख माँगकर अपनी उपजीविका चलाते हैं। प्रस्तत समस्या के लिए हमारा समाज जिम्मेदार है। प्रस्तुत समस्या का जिक्र 'नाय ज्ञानोदय' नवंबर, २००३ के अंक में प्रकाशित चित्रा मुद्गल द्वारा लिखित 'शहर' कहानी में हुआ है। दुर्गा माता के प्राचीन मंदिर के ईर्द-गिर्द के भिखारी लोग भीख माँगते हैं। और अपना उदर निर्वाह करते हैं। इस प्रकार लेखिका ने प्रस्तुत कहानी में विवेच्य समस्या का चित्रण किया है।

5.2.9 मजदूरों के शोषण की समस्या :-

मजदूर समाज का वह वर्ग है, जो दिन-रात अथक परिश्रम करके अपना उदर--निर्वाह करता है। ऐसे मजदूर वर्ग का शोषण किया जाता है। यहाँ तक उनके साथ मार-पीट भी की जाती है।

प्रस्तुत समस्या का जिक्र 'नया ज्ञानोदय', अक्टूबर, 2003,, के अंक में प्रकाशित कृष्ण बिहारी द्वारा लिखित 'धोबी का कुत्ता' कहानी में आया है। कहानी में प्रमुख पात्र रघुवीर और उसका मित्र अवधेश यह दोनों लॉन्ड्री में काम करते हैं। वे मजदूर हैं। उन्हें वेतन भी नहीं मिलता। जिस जगह पर वे काम करते हैं, वहाँ पर ही उन्हें सोना पडता हैं। यहाँ तक उनके साथ मार-पीट भी की जाती हैं। इस प्रकार मजदूरों के शोषण पर कहानीकार ने प्रकाश डाला हैं।

5.2.10 अवैध संतानों की समस्या :-

स्त्री-पुरुष के अनैतिक संबंधों में जन्म लेनेवाली संतानों को अवैध संतान कहा जाता हैं। समाज ऐसी संतानों को स्वीकार नहीं करता। ऐसी संतानों का कोई भविष्य नहीं होता। ऐसे बच्चे गुनाहगार प्रवृत्ति की ओर बढ़ते हैं। प्रस्तुत समस्या विकराल है।

'नया ज्ञानोदय' , दिसंबर, २००३ के अंक में प्रकाशित रमा सिंह द्वारा लिखित 'ग्रहण' कहानी की नायिका वसुंधरा राहूल के साथ अनैतिक संबंध रखती है। जिससे वह गर्भवती बनती है। राहुल की माँ सुमन वसुंधरा को गर्भपात करने की सलाह देती है। लेकिन वसुंधरा अपने निर्णय पर अड़िग है। वह अपने बच्चे को जन्म देती है। और स्वयं उसकी परवरिश करने की जिम्मेदारी उठाती है। इस प्रकार अवैध संतानों की समस्या की ओर लेखिका ने समाज का ध्यान आकृष्ट किया है।

5.2.11 बाल -सुधार गृहों में बालकों के शोषण की समस्या :-

सरकार ने बाल-सुधार गृहों का निर्माण किया है। जिसमें अपराधी बालकों को उनके सुधार हेतु रखा जाता है। लेकिन बाल-सुधार गृहों में भी सुधार के नाम पर उनका शोषण किया जाता है। प्रस्तुत समस्या का जिक्र 'नया ज्ञानोदय', जून ,२००३ के अंक में प्रकाशित पुन्नी सिंह द्वारा लिखित 'अंतर्कथा' कहानी में हुआ है। प्रमोद ने अपने चाचा का कत्ल किया है। इस आरोप में उसे पुलिस पकडकर बाल-सुधार गृह में रख लेती है। वहाँ पर उसका शोषण होता है। इस पक्ष पर प्रकाश डालते हुए लेखक ने लिखा है ,- ''कुछ लड़कों ने आश्रम पर मौनी बाबा की सेवा में या उनके फार्म पर काम करने के लिए जाने से भी मना कर दिया। बल्कि उनमें से एक-दो ने उन के मुँह पर कहा कि बाबा व्यभिचारी है। लड़कों के साथ कुकर्म करता है। वे किसी कीमत पर वहाँ नहीं जाएँगे।''[21]

इस प्रकार प्रस्तुत समस्या पर प्रकाश डाला गया है।

5.3 राजनीतिक समस्याएँ :-

राजनीति का महत्त्व सर्वोपरि है। राजनीति धर्म, समाज, अर्थ, शिक्षा, संस्कृति,आदि क्षेत्रों पर अपना गहरा प्रभाव डालती है। भारतीय राजनीति में एक समय ऐसा था कि राजनीति में भाग लेना देश सेवा मानी जाती थी। लेकिन राजनीति में गुंडा गर्दी, धन, साम्राज्यवादी दृष्टिकोण आदि के कारण नई-नई समस्या आई है।

'नया ज्ञानोदय', वर्ष, २००३ की पत्रिका में राजनीतिक समस्याओं का निम्नलिखित प्रकार से जिक्र हुआ हैं।

5.3.1 युद्ध की समस्या :-

युद्ध की समस्या आज के विश्व समाज के लिए सबसे गंभीर समस्या है। युद्ध के कई कारण है। इन में से प्रमुख कारण साम्राज्यवाद रहा है। राजनीतिक नेता गण अपने साम्राज्यवादी, पूँजीवादी दृष्टिकोण के कारण युद्ध करते हैं।जिसके गंभीर परिणाम समाज के लागों के भोगने पडते हैं। यहाँ तक मानवता खतरे में आ जाती है। अंतर्राष्ट्रीय यायतायात पर विपरित परिणाम होता है।

'नया ज्ञानोदय' दिसंबर, २००३, में प्रकाशित हीरालाल नागर द्वारा लिखित 'डेक पर अँधेरा' कहानी युद्ध समस्या का अच्छा दस्तावेज है। प्रस्तुत कहानी में युद्ध का चित्रण करते हुए लेखक लिखता है - अभी देर पहले जिस जगह से समुद्र की छाती पर गोले बरसाए जा रहे थे, वहाँ उसके पांवों के निशान भी नहीं होंगे।'' २२ इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में युद्ध की दाहकता का वर्णन किया है।

5.3.2 शरणार्थियों की समस्या :-

आज मानव युद्ध परिवेश में जीवन यापन कर रहा है। युद्ध में परास्त पक्ष के लोग शरणार्थी होते है। युद्ध में विजयी पक्ष शरणार्थियों को सँभालने की

जिम्मेदारी लेता हैं। लेकिन उनके साथ अमानवीय व्यवहार किये जाते हैं। उनके साथ मार-पीट की जाती है। यहाँ तक बहू-बेटियों की इज्जत लूटी जाती है। शरणार्थियों के साथ बर्बरतापूर्वक व्यवहार किया जाता हैं। प्रस्तुत समस्या काफी गंभीर है।

'नया ज्ञानोदय', फरवरी, २००३ के अंक में प्रकाशित ज्ञान प्रकाश विवेक द्वारा लिखित 'रिफ्यूजी कैम्प' कहानी में कहानीकार ने शरणार्थियों के शोषण की विकराल समस्या की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया है प्रस्तुत कहानी में शरणार्थियों का कैम्प हैं। कहानी का नायक शरणार्थी है। नायक के साथ अन्य लोग भी कैम्प निवासी हैं। वहाँ के अधिकारी शरणार्थियों के साथ अमानवीय व्यवहार करते हैं। यहाँ तक पीने के लिए पानी की कतार में उन्हें घंटों खड़ा रहना पडता है। रोटी के लिए तरसना पडता है। कैम्प का एक सैनिक सोफिया पर बलात्कार करता है। इस प्रकार शरणार्थियों का चौतरफा शोषण होता हैं। प्रस्तुत समस्या का विकराल रुप विवेच्य कहानी में है।

5.4 शैक्षिक समस्या :-

शिक्षा समाज के निर्माण एवं विकास का बहुत बडा अंग है। शिक्षा व्यक्तित्व के विकास में असाधारण भूमिका निभाती है। शिक्षा जैसे पावन क्षेत्र में कुछ समस्याएँ नजर आती हैं। जिनकी ओर विवेच्य कहानीकारों ने अनदेखी नहीं की। कुछ प्रसंगों के माध्यम से कहानीकारों ने प्रस्तुत समस्या की ओर समाज का ध्यान आकृष्ट किया हैं।

5.4.1 आर्थिक विपन्नता के कारण पढ़ाई में बाधा की समस्या :-

शिक्षा क्षेत्र में धन का काफी प्रयोग हो रहा है। जिसके कारण शिक्षा केवल अमीरवर्ग तक सीमित रहती है , ऐसा ही लगने लगा है। सामान्य लोग आर्थिक

विपन्नता का शिकार बन गए है। शिक्षा उनके बस की बात नहीं रही। लेकिन नई पीढ़ि शिक्षा के महत्त्व को आज स्वीकार करके पढ़ाई के क्षेत्र में पिछे नहीं रहना चाहती। चाहे उसके लिए उसे रोटी भी क्यों न मिले। प्रस्तुत समस्या गंभीर है। प्रस्तुत समस्या का जिक्र 'नया ज्ञानोदय', अगस्त, २००३ के अंक में प्रकाशित नफीस आफरीदी द्वारा लिखित 'घर पहाड़ होता है' कहानी में हुआ है। विवेच्य कहानी का पात्र किरपाल को आर्थिक विपन्नता का सामना करना पडता है। किरपाल ने शिक्षा का महत्त्व जान लिया है। इस पक्ष पर प्रकाश डालते हुए लेखक ने लिखा है, - ''नींव तो तुमने डाली ही नहीं बाऊ। एकदम बौखला गया था किरपाल, फिर पलट कर बोला था, बेबे बोल देना इनको नहीं माँगूगा इनसे पढ़ाई का खर्चा। रोटी भी चाहे तो बंद कर दें।''[२३]

प्रस्तुत समस्या के माध्यम से लेखक ने आर्थिक विपन्नता के कारण पढ़ाई में बाधा की समस्या पर प्रकाश डाला है।

5.5 धार्मिक समस्या :-

सामाजिक मूल्यों के निर्धारण में धर्म महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह मूल्य मानव व्यवहार की आधारशिला होती है। धर्म में अलौकिक सत्ता का प्रभाव दिखाकर सामाजिक मूल्यों का संवर्धन किया जाता है। धर्म साधारण जीवन को अलौकिक शक्तियों से जोड़ने का काम करता है। अतएव सामाजिक व्यवस्था के एकीकरण में धर्म का कार्य महत्त्वपूर्ण माना जाता है। आज के समस्या प्रधान युग में धर्म जैसा क्षेत्र समस्याओं से कैसे दूर रह सकता हैं ?

रीति-रिवाज, रुढ़ि-परंपरा, संस्कार, विश्वास मान्यता धर्म के अग हैं। जब इनमें विकृतियाँ आती है, तब धार्मिक क्षेत्र में समस्या आती है। तब धर्म का रुप ही बदल जाता है। धर्म जैसे पवित्र क्षेत्र में समस्या का न होना हर धर्म के लिए गौरव

की बात होती है। धार्मिक समस्या की ओर विवेच्य कहानीकारों ने गंभीरता के साथ देखा है। और अपने कहानियों में उसको चित्रित किया हैं।

'नया ज्ञानोदय', वर्ष २००३ की कहानियों में प्रकाशित प्रमुख 'धार्मिक समस्या' निम्नलिखित प्रकार से रही हैं।'

5.5.1 अंधविश्वास की समस्या :-

२१ वी शताब्दी का युग 'विज्ञान का युग' है। एक ओर विज्ञान मानव को वरदान साबित हुआ। तो दूसरी ओर समाज में अंधविश्वास दिन-ब-दिन अपनी जडें मजबूत कर रहा है। धर्म के नाम पर किए जानेवाले विधि संस्कार, रीति-रिवाज, स्वर्ग-नरक आदि के द्वारा सामान्य लोगों का शोषण किया जा रहा है। प्रस्तुत समस्या पर डॉ. शशि जेकब ने लिखा है, ''ग्राम समाज में व्याप्त इन अंध मान्यताओं के फलस्वरुप ही हमारे बहुत से गांव प्रगति नहीं कर पा रहे हैं। इनके पिछड़ेपन का एक बहुत बड़ा कारण इन्हीं अंधविश्वासों के प्रति विश्वास एवं आस्था का प्रबल भाव हैं।''[24]

विवेच्य कहानीकारों का ध्यान प्रस्तुत समस्या की ओर गया हैं। उन्होंने अपनी कहानियों में सहजता के साथ अंधविश्वास की समस्या पर कठोर प्रहार किया है।

'नया ज्ञानोदय',फरवरी, २००३, के अंक में प्रकाशित चंद्रिका ठाकुर 'देशदीप' द्वारा लिखित 'पापिन-पाँखी' कहानी में प्रस्तुत समस्या का जिक्र करते हुए लिखा है, ''पिर्र ऽऽऽ... पिर्र ऽऽऽ... पिरपिरा उठी चिड़िया तो कामा बुआ के कान में पिघला हुआ तेल पड गया। जैसे अगिन-बाण उतर गया कलेजे में। तीन रात से लगातार इसी सहुढ़ा-गाछ पर दलचिरैया बोल रही है ! एक ही समय..... रोज अधरतिय, में ! बडा अपशकुन होता है - 'इस मुँहजली की बोली .....! जब बोलेगी

तो अशुभ ! पिरपिराएगी तो कोई न कोई खून लेगी'..... जरुर ही !'..... दुश्चिन्ता की ढेर सारी लकीरें तन जाती हैं कठोर से चेहरे पर। फिर जाने किस दैव-कोप को शान्त करने, भर लोटा पानी अँगना में उलीछ देती है। मुँह से...'थुक्क..... थुक'.... थुकथुकाती है, बुदबुदाकर कोई शान्ति-जाप करती है, तब कहीं जाकर मन शान्त होता है। बुआ सभी टोटे उतारना जानती है..... अपना कर्तव्य करती है।''[25]

उसका विश्वास है कि दलचिरैया की बोली से ही परिवार के सदस्यों की मृत्यु हो जाती हैं। यह उसका अंधविश्वास है। जिसपर लेखक ने प्रकाश डाला है।

'नया ज्ञानोदय ', फरवरी 2003, के अंक में प्रकाशित राकेश कुमार सिंह द्वारा लिखित 'अरण्यरात्रि की महक' कहानी में नायक का बेटा बीमार है। वह उसे अस्पताल ले जाने के बजाय गँजेड़ी बाबा के धाम पर जाकर मन्नतें माँगता है। जो अंधविश्वास हैं। इस पक्ष पर प्रकाश डालते हुए लेखक ने लिखा है, ''अपने इकलोते बेटे डोनका को चंगा करने के लिए हरजतन कर थक चुका था कोयली मुण्ड़ा। लातेहार की अँग्रेजी दवाई, महुआमिलान की होमियो पैथी वाली गोलियाँ, जंगली जडी-बूटियाँ और बैगा की झाडफूँल.....!'' मन्त्र द्वारा तिल्ली काटने वाला, कौडी फेंक कर सांप को नचाने वाला, कर्णपिशाच को वश में लेने वाला बैगा भी डोनका को ठीक नहीं कर सका था। ठीक तो क्या होता डोनका, छः महीनों में और सूख कर काँढ़र हो गया था।

''मेरा मन कहता है सेब कि गँजेडी बाबा के धाम पर जाने से कुछ होगा जरुर ! बडा सत्त है वहाँ पर सैब ..... पर हिन्दू-सादान लोगों का देवता हमारी पूजा लेगा क्या ?''

इतनी मन्नतें माँग चुका था कोयली कि यदि डोनका चंगा हो भी जाता तो मनौतियाँ पूरी करता और चढ़ावे चुकाना-चढ़ाता ही कोयली बूढ़ा हो जाता।''[26]

विवेच्य कहानीकारों ने प्रस्तुत कहानियों में अंधविश्वास की समस्या पर प्रकाश डालते हुए वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया है।

निष्कर्ष

मानव समाज प्रिय है। वह समाज में रहता है। जबसे वह समाज में रहने लगा है, तबसे विविध समस्याओं का सामना करना पड रहा हैं। मानव जीवन पर ऐसे समस्याओं का विपरित परिणाम होता हैं। ऐसे समस्याओं से मानव को लडना पड रहा हैं । आधुनिकीकरण या पाश्यात्य जीवन शैली का अनुकरण, औद्योगिकरण आदि का परिणाम मानव जीवन पर हो रहा हैं। 'नया ज्ञानोदय' पत्रिका में प्रकाशित विवेच्य कहानियों में सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षिक, धार्मिक क्षेत्र की समस्याएँ दिखाई देती हैं।

अशिक्षा के कारण अल्पायु में विवाह होने के कारण विधवा समस्या तेजी से पनप रही है। सुंदरता विधवा जीवन का शाप बनता है। जिसके कारण उसे पुरुष की वासना का शिकार बनना पडता है। उच्च शिक्षित विधवा भी आज वैधव्यपूर्ण जीवन व्यतीत कर रही है। पुरुष की वासना के शिकार के कारण स्त्री पर बलात्कार किया जाता है। जिस में बलात्कारित स्त्री की हत्या भी की जाती है। परिवार में असामंजस्य के कारण परित्यक्ता की समस्या तेजी से पनप रही है। जिसमें स्त्री का शोषण होता है। आज आधुनिक जीवन शैली के कारण स्त्री के अविवाहित रहने की समस्या भी गंभीर है। परिवार में विविध स्तरों पर आनेवाला असामंजस्य का वातावरण दाम्पत्य संबंध में टूटन की समस्या को जन्म देता है।

औद्योगिकरण की वजह से आदिवासी संस्कृति नामशेष हो रही है। अपने रीति-रिवाज रुढ़ि-परंपराओं का निर्वाह करने के लिए आदिवासी लोग आंदोलन करने लगे हैं। अविकसित संतानों की समस्या नवभारत के निर्माण के लिए गंभीर समस्या है। भिखारियों की

समस्या भारतीय समाज का अभिशाप है। मजदूरों का चहुतरफा होनेवाला शोषण समाज के विकास में बहुत बडी बाधा है। अवैध संतानों की समस्या भयावह हैं। बाल-सुधार गृहों में होनेवाला बालकों का शोषण उनके विकास में बहुत बडा अवरोध है। युद्ध तथा शरणार्थियों की समस्या आज के राजनीति पर लगा हुआ धब्बा हैं। आर्थिक विपन्नता के कारण पढ़ाई के लिए छटपटानेवाले युवकों की समस्या शिक्षा क्षेत्र में बढ़ते हुए धन पर सवाल निर्माण करती है। रुढ़ि, परंपराओं के नाम पर अंधविश्वास समाज को अवनति की ओर ले जाता है। जिसके कारण समाज पिछड़ा रहने की संभावना अधिक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१.	डॉ. सीलम वेंकटेश्वरराव-यशपाल के उपन्यास समस्या मूलक अध्ययन	पृ- २४
२.	सं. रामचंद्र वर्मा-मानक हिंदी कोश भाग- ५	पृ. २८३
३.	सं. सत्यप्रकाश बलभद्र प्रसाद मित्र-मानक अंग्रेजी हिंदी कोश	पृ-१०७१
४.	सं.नगेंद्रनाथ वसु- हिंदी विश्वकोश भाग - २३	पृ- ५०८
५.	डॉ. रामशंकर शुक्ल- 'रसाल भाषा' शब्दकोश	पृ. १५२१
६.	सं. डॉ. शामसुंदर दास - हिंदी शब्दसागर भाग -१०	पृ. ४९६७
७.	सं. श्री नवल जी - नालंदा विशाल शब्दसागर	पृ. १४०७
८.	डॉ. विमल भास्कर - हिंदी में समस्या साहित्य	पृ- ३५
९.	डॉ. रेखा कुलकर्णी - हिंदी के सामाजिक उपन्यासों मे नारी	पृ- २५३
१०.	'नया ज्ञानोदय' दिसंबर, २००३ रमा सिंह - ग्रहण	पृ. ३२,३३
११.	'वही अप्रैल, २००३, शिवकुमार यादव, कई-कई शक्लोंवाले प्रेत'	पृ. ७०
१२.	डॉ. आसाराम बेवले - समकालीन हिंदी नाटकों में नारी के विविध रुप	पृ- ६८
१३.	'नया ज्ञानोदय' मई, २००३, दिनेश पाठक - पारुल दी	पृ - ११०
१४.	डॉ. आसाराम बेवले - समकालीन हिंदी नाटकों में नारी के विविध रुप	पृ. ८४
१५.	'नया ज्ञानोदय, ' दिसंबर, २००३ जयशंकर, -भुरमुंडा	पृ- २९
१६.	'नया ज्ञानोदय' दिसंबर - २००३, जयनंदन - अपदस्थ	पृ- ८५
१७.	वही, अगस्त - २००३, गोविंद मिश्र- तुम हो	पृ- ३४
१८.	वही, जुलाई -२००३, विजय - जंगल का सपना	पृ-९८

१९.	वही, दिसंबर - २००३, रमा सिंह - ग्रहण	पृ- ३७
२०.	'नया ज्ञानोदय', नवंबर-२००३, उर्मिला शिरीष - सहसा एक बूँद उछली	पृ- ३७-३८
२१.	वही, जून - २००३, पुन्नी सिंह - अंतर्कथा	पृ- ६३,६४
२२.	वही, दिसंबर - २००३, हीरालाल नागर - डेक पर अँधेरा	पृ- १०५
२३.	वही, अगस्त - २००३, नफीस आफरीदी - घर पहाड होता है	पृ- ८१
२४.	डॉ. शशि जेकब - महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में वैचारिकता	पृ - १०२
२५.	'नया ज्ञानोदय', फरवरी-२००३, चंद्रिका ठाकुर 'देशदीप'- पापिन -पाँखी	पृ - ८३
२६.	वही, वही, राकेश कुमार सिंह - अरण्यरात्रि की महक	पृ -७७